राजनीतिक सिद्धांत का पतन

राजनीतिक सिद्धांत की ओर सबसे पहले आकर्षित करने का श्रेय अमेरिका के राजनीतिक शास्त्री डेविड ईस्टन को जाता है ।उन्होंने स्पष्ट कहा कि सिद्धांत का निर्माण राजनीतिक सिद्धांत को एक व्यवस्थित विज्ञान बनाने का एक बहुत बड़ा शर्त है क्योंकि सिद्धांत के अभाव में राजनीतिक विज्ञान का कोई महत्व नहीं रह जाता ।एक विषय को सबसे बड़ी जरूरत उसके पास एक विकसित और रचनात्मक सिद्धांत का होना बहुत जरूरी है। केवल वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग से या फिर तथ्यों के विषयों में प्रज्ञा वर्णन कोई विषय सैनिक विषय नहीं माना जा सकता इसके लिए स्थित सिद्धांत का होना निहायत जरूरी है।
राजनीतिक सिद्धांतों के राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन में सिद्धांत के महत्व की ओर दृष्टि डालते हुए सिद्धांत निर्माण के विषय में विचार किया गया परंतु पिछले कुछ वर्षों से लगातार यह प्रयास करने के बाद भी अभी तक राजनीतिक सिद्धांत का निर्माण सही रूप से नहीं हो सका और ना ही राजनीतिक सिद्धांत के निर्माण के क्षेत्र में नई दिशा प्रदान की जा सके राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र में इस धीमी गति के कुछ विशेष परिस्थितियां हैं जिसको हम निम्न तर्कों के द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

1. सर्वमान्य सिद्धांत का अभाव
2. राजनीतिक चौराहे पर खड़ा होना
3. दिशा का भ्रम
4. अवहेलना करना

5. अधीनता
6. नए राष्ट्रो का यथा पूर्ण स्थिति।

हालांकि आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत तथ्यों की ठोस प्रमाणीकरण पर आधारित है इसमें तथ्यों का ठोस वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है राजनीतिक व्यवहार के आधार पर सिद्धांत का निर्माण होता है फिर भी कुछ विद्वानों ने आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के पतन / अवसान माना है।

आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत की स्थिति आज बड़ी सोचनीय है रॉबर्ट डहल के अनुसार "अंग्रेजी भाषा भाषी जगत में राजनीतिक सिद्धांत मर चुका है साम्यवादी देशों में वह बंदी है और अनंत्र मर रहा है"।ऑक्सफोर्ड जैसे जगहों में जहां परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत का पालन पोषण हुआ था आज यह देखने को मिलता है कि राजनीतिक सिद्धांत मरणासन्न पर पहुंच चुका है। इसका कारण यह माना जाता है कि कार्ल मार्क्स जैस्मिन तथा लास्की के बाद एक भी उल्लेखनीय दार्शनिक नहीं हुआ। डेविड ईस्टन के अनुसार"राजनीतिक विचारधारा का ऑफिस है सामाजिक अस्त-व्यस्त था और परिवर्तन की दिशा में होता है।"

यूनान के राज्य दर्शन का अभी तक सामाजिक संकट के दौरान हुआ ।इंग्लैंड में दर्शन का जन्म 16 वी 17 वी सदी में हुआ उसका कारण धार्मिक और राजनीतिक विवाद का कारण रहा।1789 में फ्रांसीसी क्रांति के बाद जो स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व किस सिद्धांत का जन्म हुआ वह सामान्य परिस्थिति का ही देन थी।डेविड ईस्टन का कहना है कि यद्यपि आज भी हम सामाजिक तनाव और सांस्कृतिक परिवर्तन के बुनियादी संकट से गुजर रहे हैं। राजनीतिक दर्शन की परंपरा का जन्म होना अपेक्षित है परंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि दुनिया में किसी भी कोने में उल्लेखनीय राजनीतिक दर्शन का अभी उदय नहीं हुआ है।इसलिए डेविड ईस्टन ने कहा है कि आधुनिक राजनीतिक चिंतन सदियों पुरानी परंपराओं पर आधारित हैं। नए राजनीतिक चिंतन में कोई अवसर नजर नहीं आते ऐसी कोई भी आधार नजर नहीं आती जहां से राजनीतिक सिद्धांत का जन्म हो सके। वास्तव में वर्तमान समय में राजनीतिक सिद्धांत दर्शन की दृष्टि से बांझपन का शिकार हो गई है।

अतः वर्तमान समय में राजनीतिक सिद्धांत के पतन होने के कई कारण हैं जो इस प्रकार है-

1. आधुनिक राजनीतिक विज्ञान का आविर्भाव होना।
2. आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत का केवल तथ्यपरक होना।
3. आधुनिक राजनीतिक शास्त्र परंपरागत चिंतन के विश्लेषण पर आधारित।
4. अनुसंधान वाद का युग।
5. विचारधाराओं का प्रभाव।

स्पष्ट है कि वर्तमान समय में पुराने दर्शन स्वरूप वाले राजनीतिक सिद्धांत का ह्रास होने लगा है और उसकी जगह विचारों के इतिहास निर्णय लिया है जहां पर सिद्धांतों के स्थान पर तथा पर अधिक महत्व दिया जा रहा है परंतु अपनी कमजोरियों के बावजूद भी राजनीतिक सिद्धांत अभी जीवित है और नए जोश के साथ आगे बढ़ रहा है। वर्तमान सदी में होने वाले विभिन्न संकटों एवं जिन्होंने राजनीतिक विचारों में जागृति उत्पन्न की है एवं सामाजिक और राजनीतिक पर्सनल पर सिद्धांत कार अपनी अभिरुचि दिखाने लगे हैं।विश्लेषण वादी सिद्धांत

का जिन्होंने पारंपरिक राजनीतिक दर्शन के सिद्धांत के प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाए वे स्वयं बौद्धिक दृष्टि से बांस साबित हुए। आधुनिक रचनाएं मुश्किल से पारंपरिक राजनीतिक शास्त्रियों की महान रचनाओं की तुलना में श्रेष्ठ साबित हुई इसलिए वर्तमान समय में ना केवल तथ्यपरक बल्कि मूल्यपरक आधार पर भी राजनीतिक सिद्धांत का निर्माण करना होगा ।इसलिए डॉ बिवासी का कहना है कि" राजनीतिक दार्शनिकों की महान परंपरा का अवसान दिखाई पड़ने लगा है ।उन्हीं के शब्दों में डेविड ईस्टन, अल्फ्रेड ,कब्बन तथा अनेक आधुनिक राजनीतिकको वैज्ञानिक धारणा है कि इस राजनीतिक सिद्धांत की जिसका संबंध है राजनीतिक दर्शन से जोड़ते हैं परंपरा का तीव्र गति से हराश हो रहा है। डेविड ईस्टन, कब्वन आदि विद्वानों ने राजनीतिक सिद्धांत की हारास के बारे में कहा है। पीटर लासवेल, डालने तो राजनीतिक सिद्धांत की मृत्यु की घोषणा भी कर दी है।ऑक्सफोर्ड जैसे स्थानों में जहां परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत का पालन पोषण हुआ था यह सुना जाता है कि राजनीतिक सिद्धांत मृतप्राय हो चुका है अथवा प्रभाव की प्रक्रिया से गुजर रहा है।इसके समर्थकों का कहना है कि कार्ल मार्क्स , लास्की, मिल आदि के बाद आज तक कोई भी उल्लेखनीय राजनीतिक दार्शनिक नहीं हुआ है।